INDIAN RIVER COUNCIL
भारतीय नदी परिषद

Ukhe unh mn~xe dk iquthZou

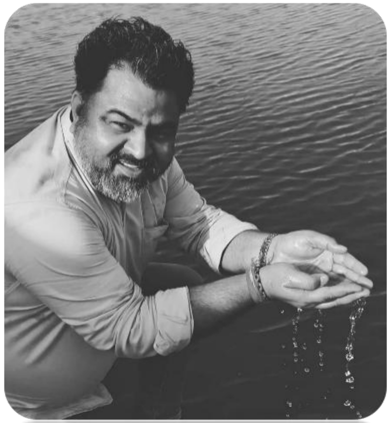

jeu dkUr
fjojeu vkQ bf.M;k
lLFkkid&Hkkjrh; unh ifj'kn

Ukhe unh dk ifjp;

- dqy yEckbZ 188 fdyksehVjA
- gkiqM+ tuin esa 14-20 fdyksehVjA
- cqyUn”kgj tuin esa 95 fdyksehVjA
- iwohZ dkyh unh dh lgk;dA
- Pkkj tuinksa gkiqM+] cqyan”kgj] vyhx<+ o dklxat esa cgrh gSA
- gkiqM+ tuin ds nR;kuk xkao ls fudydj dklxat esa tkdj iwohZ dkyh unh esa lekfgr gks tkrh gSA
- 200 xkao unh fdukjs cls gSA
- vf/kdrj xkaoksa ds rkykcksa ls tqM+h gqbZ gSA

Ukhe unh mn~xe dh [kkst &o’k 2000

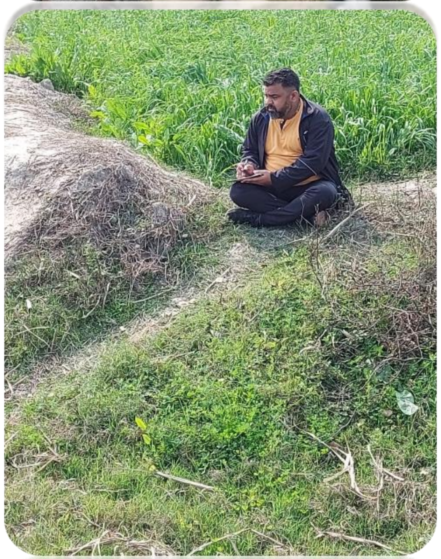

Tol{k.k d nkjku cuk;k x;k uD” kk

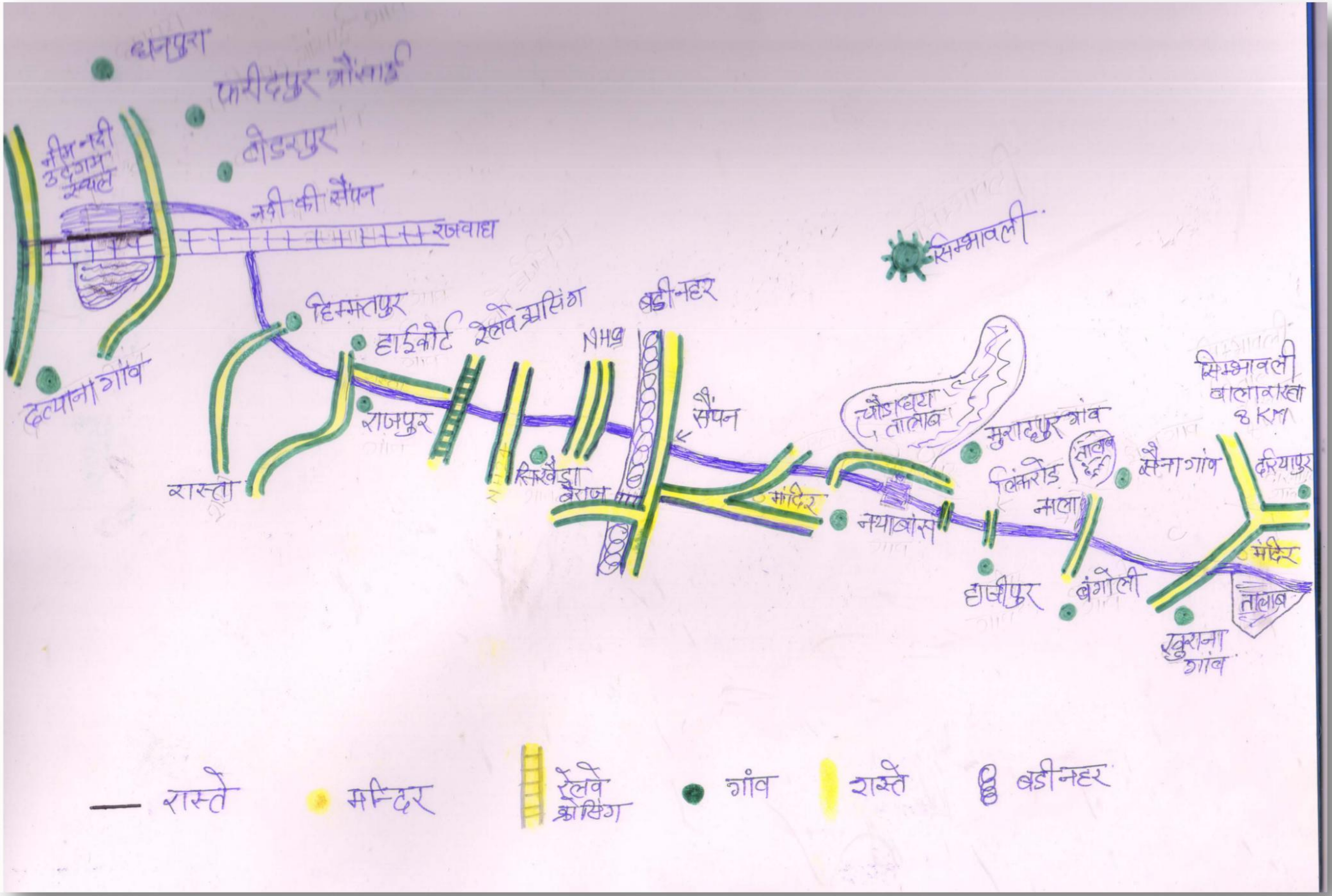

INDIAN RIVER COUNCIL
भारतीय नदी परिषद

gkiqM+ ftyk iz”kklu ds lkFk leUo;

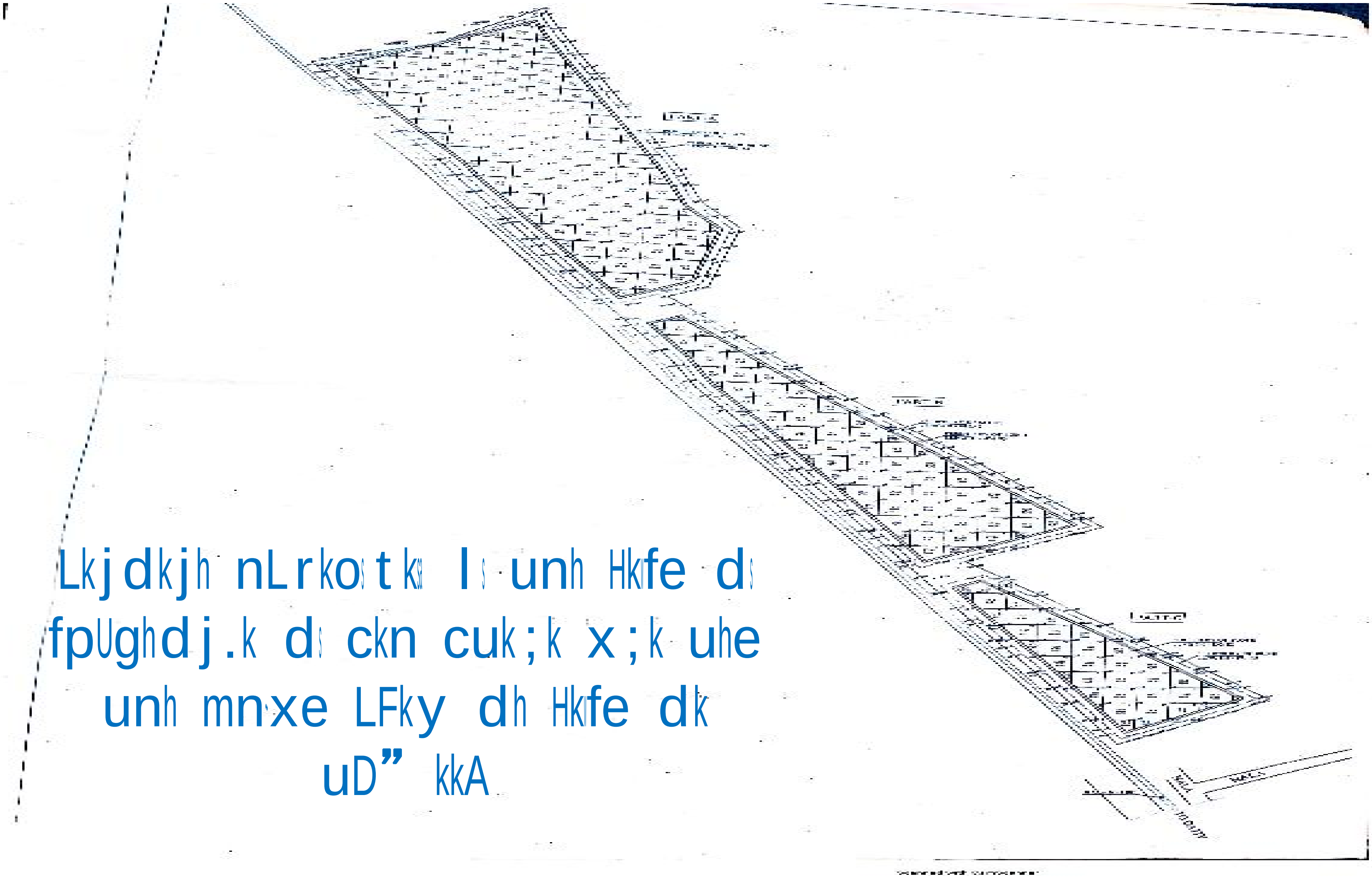

Lkjdkjh nLrkost ksa ls unh Hkwfe ds
fpUghdj.k ds ckn cuk;k x;k unh
mn~xe LFky dh Hkwfe dk
uD”kkA

INDIAN RIVER COUNCIL
भारतीय नदी परिषद

xzkeh.kksa ds lkFk cSBd

Ukekeh xaxs }kjk rS;kj fd;k x;k Ukhe unh dk uD”kk

NEEM RIVER

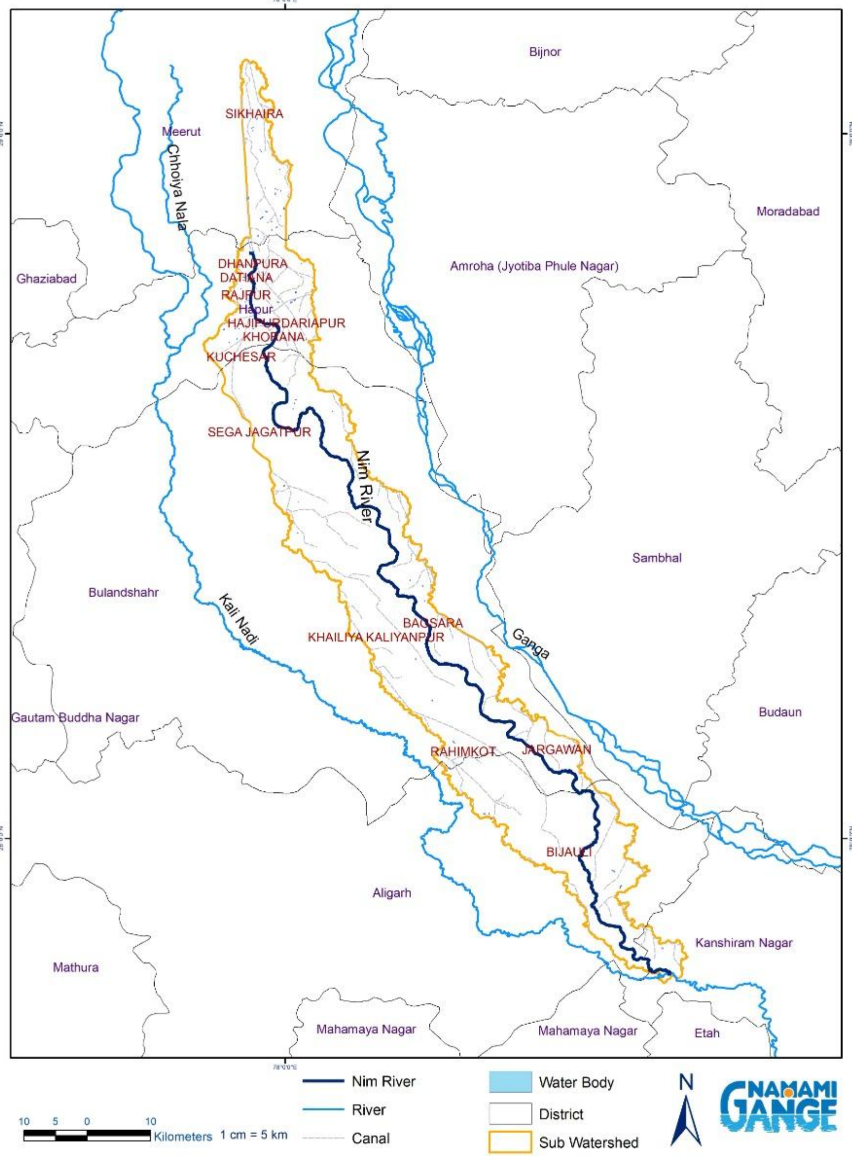

Uknh dh tehu dCtkeqDr djkus ds fy, Xkkao ds uke i=

नीम नदी

NEER FOUNDATION

अपील

सम्मानित नदी प्रेमियों,

हापुड़ जनपद के दत्याना गांव से देश की राष्ट्रीय नदी गंगा की उप-सहायक व हापुड़ की गंगा ''नीम नदी'' बहती रही हैं, जिसके अवशेष धरा पर आज भी मौजूद है और इस नदी के किस्से व कहानियां निकट बसे समाज के बुजुर्गों की जुबान से आज भी सुनने को मिलते हैं। यह करीब **188** किलोमीटर लम्बाई तक बहती रही है। ऐतिहासिक गांव दत्याना के जंगल से प्रारम्भ होकर बुलंदशहर, अलीगढ़ से होते हुए कासगंज में जाकर श्याम बाबा मन्दिर के निकट पूर्वी काली नदी में मिल जाती है। पूर्वी काली नदी कन्नौज में जाकर गंगा में समाहित हो जाती है।

''नीम'' का नाम आते ही महसूस होता है कि हम किसी औषधी की बात कर रहे हैं और उसके नाम पर नदी हो तो यह समझने में कोई दुविधा नहीं होनी चाहिए कि नदी का पानी नीम जैसे गुणों से युक्त रहा है। जब पानी औषधीय गुणों से युक्त हो जाता है तो वह जल बन जाता है। ऐसा जल जब ''नीम नदी'' में बहता होगा तो सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस छेत्र में बीमारियों का प्रकोप कम रहा होगा, लेकिन जैसे-जैसे नदी मरणासन्न हुई तो सभी प्रकार की बुराइयों व बीमारियों ने अपने पैर-पसारने प्रारम्भ कर दिए।

नीम नदी के हालात आखिर ऐसे क्यों हुए कि उसको अपने अस्तित्व को मिटाना पड़ा? इसके लिए हम मानव जगत के प्राणी ही कसूरवार रहे हैं। जिस छेत्र अथवा गांव के निकट से कोई नदी बहती हो उससे बड़ा सौभाग्य उस गांव व स्थान का कुछ नहीं हो सकता है। नदी अपने आप में पूरी संस्कृति है, नदी ही पूरा समाज है और नदी ही प्रकृति का प्रारम्भिक रूप है। जहां नदी रही हो और वहां से नदी को विदा करके धक्के मार कर भगा दिया जाए तो वहां दुख, पीड़ा, कष्ट, नुक्सान व अपूर्णीय छति जैसे दोष उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

नदी का महत्व सभी धर्मों में समान है। इराक-इरान में दजला व फरात नदियां रही हों या फिर भारत में सिंधु घाटी की नदियां सबने अपने आंचल में सभ्यताओं को विकसित होने दिया, लेकिन इन सभ्यताओं ने ही धोखा करके इन नदियों को अपने छेत्र से पलायन के षडयंत्र रचे लेकिन नदियों ने जब अपना रौद्र रूप अख्तियार किया तो मेसोपोटामिया व मोहन-जौदाड़ो जैसे सभ्यताओं को ही नष्ट कर दिया। नदियों ने अपने आप से छेड़छाड़ करने वाले दोषियों को कभी बख्शा नहीं है यही हमारा पौराणिक इतिहास हमें बताता है, लेकिन नदियों ने सभ्यताओं को विकसित होने व फलने-फूलने का अवसर सभी की समान रूप से दिया है।

हमारे जिस पुरातन समाज ने जहां नदी नहीं थी वहां मिलकर तालाब/जौहड़/पोखर आदि बनाए जिससे कि पानी की आवश्यकता की पूर्ति हो सके। हमारे धार्मिक ग्रन्थ जल, तालाब व नदियों की महिमा से भरे पड़े हैं। यह दत्याना गांव का सौभाग्य है कि एक नदी का उद्गम यहां से है, लेकिन हमनें नदी के उद्गम को बंद करके इस गर्व को मिटा दिया। आप जिस नदी के सहारे दुनिया को यह बता सकते थे कि हम भी नदी वाले हैं लेकिन उसको ही मिटा दिया। आज ''नीम नदी'' की चीखें हम सभी को सुननी चाहिएं। नदी जैसे कह रही हो कि मेरा दम घुट रहा है मुझे आजादी चाहिए। मैं बहना चाहती हूं लेकिन मुझे मिट्टी में दबा दिया गया है।

जिला प्रशासन, दत्याना के निवासियों, मीडिया सहित कुछ अन्य संगठनों के भरपूर सहयोग से अब नदी की सफाई का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। मुझे महसूस होता है कि गांववासी भी चाहते हैं कि यह नदी पुनः बहे। कोई फोन करके नदी की महत्ता बताता है तो कोई नदी का इतिहास। इस नदी के जीवित होने से दत्याना गांव का नाम देश-दुनिया में होने वाला है। अब वह दिन दूर नहीं है जब दत्याना एक तीर्थ के रूप में जाना जाएगा। देश-विदेश से लोग नदी उद्गम को देखने व पूर्जा-अर्चना करने दत्याना आएंगे। आने वाले समय में ''भूतनाथ जी'' के पुरातन व ऐतिहासिक मन्दिर के साथ-साथ ''नीम नदी'' भी दत्याना गांव की पहचान बनेगी।

नदी के बहने से पूरे दत्याना सहित बहाव क्षेत्र के सभी गांवों को लाभ होगा। यहां हजारों पौधे लगेंगे जिनके फल आप सभी को मिलेंगे। यहां बनने वाले तालाबों से गांव के पानी की गुणवत्ता में सुधार होगा तथा भूजल स्तर भी बढ़ेगा।

मैं अंत में वह बात कहना चाहता हूं जो ''नीम नदी'' शायद चाहती है। ''नीम नदी'' की इच्छा है कि जो भी व्यक्ति व संगठन मुझे मिट्टी के दबाव से आजाद कराने में अपना योगदान देगा मैं उसकी सभी मनोकामना पूरी करूंगी। मेरी आपसे अपील है कि नीम रूपी नदी को आजाद कराने के लिए अपने मन में एक मनोकामना लेकर घर से निकलें और नदी को बहने में सहयोग करें। ''नीम नदी'' आपकी मनोकामना अवश्य पूरी करेगी।

नदी के बहने से गांव के प्रत्येक परिवार में खुशहाली होगी। गांव पर कोई विपत्ति नहीं आएगी। घरों से निकलो, फावड़ा उठाओ और ''नीम नदी'' को आजाद कराने में अपना योगदान दो, यह मत सोचना कि जब कोई दूसरा जाएगा मैं भी तभी जाऊंगा। धर्मलाभ कमाना है व मनोरथ पूर्ण करना है तो प्रत्येक व्यक्ति यह सोचकर घर से निकले कि मुझे नदी में श्रमदान करना ही है। आप देखेंगे कि पूरा गांव आएगा और सहयोग करेगा। आओ मिलकर ''नीम नदी'' को बंधनमुक्त करें तथा उसके निर्मल व अविरल बहने का इंतजाम करें।

आपके सहयोग का अभिलाषी

(नदीपुत्र रमनकान्त त्यागी)
9411676951

हाथ बढ़ेंगे-काम बनेंगे...

Ukhe unh dk ykxk

INDIAN RIVER COUNCIL
भारतीय नदी परिषद

unh mn~xe ij Jenku ikjEHk

INDIAN RIVER COUNCIL
भारतीय नदी परिषद

नदी से लगे तीन जिलों के सैंकड़ों गांवों का भूजल स्तर होगा ऊंचा, करीब एक किमी तक के गांव इससे होंगे लाभांवित, तैयार हुआ माडल

ऋषि दत्तात्रेय की तपोस्थली से बहेगी नीम नदी

नीम नदी के बारे में यह भी जानें

वहां से होकर गुजरती है नीम नदी

जिला अलीगढ़

जिला बुलंदशहर

नदी क्षेत्र :-134 किमी

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने किया श्रमदान

लोगों में जगा उत्साह, सहयोग के लिए बढ़े हाथ

अब वह दिन दूर नहीं जब नदी में बहेगा पानी...

श्रमदान के लिए संकल्प लेने वाले युवाओं को भी याद दिलाया वादा

श्रमदान कर छात्र-छात्राएं बने भागीदार

fl|pkbl foHkkx dk il;kl

INDIAN RIVER COUNCIL
भारतीय नदी परिषद

Uknh /kkjk dh lQkbl dk vlj

Uknh mnxe ij xxk ty iokfgr 18 eb]

वृक्ष लगाओ,
जीवन बचाओ

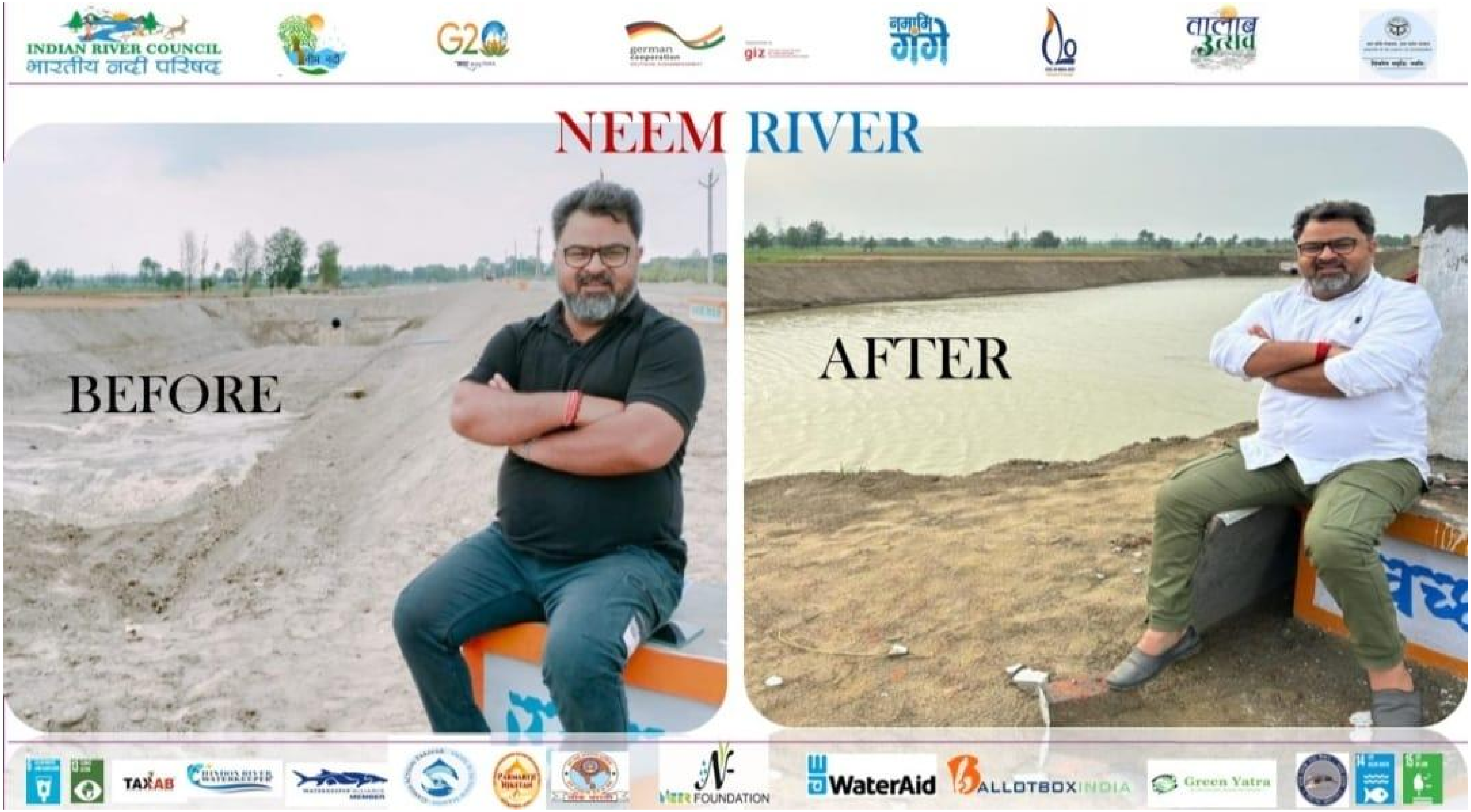
INDIAN RIVER COUNCIL
भारतीय नदी परिषद
G20
german cooperation
giz
नमामि गंगे
तालाब उत्सव
NEEM RIVER
BEFORE
AFTER
TAXAB
WATERKEEPER ALLIANCE MEMBER
FOUNDATION
WaterAid
BALLOTBOXINDIA
Green Yatra

40 years on, lost river in Hapur is back to life

STORY OF REVIVAL: Neem river in Hapur district

Rahul.singh1@timesgroup.com

Meerut: Lost for more than four decades, the Neem river in Hapur district has been brought back to life after repeated pleas by activists and environmentalists to the state government to remove squatters and structures on its banks bore fruit and finally led to action. The rejuvenation work, going on for two years, was completed after huge swathes of land encroached by people were cleared.

On Wednesday, a "river rejuvenation utsav" was inaugurated by Swatantra Dev Singh, cabinet minister of Jal Shakti along with Dinesh Khatik, minister of state for Jal Shakti in UP.

The Neem river emanating from Hapur district meanders through Bulandshahr and Aligarh districts, covering a distance of about 188 km. It is a tributary of the Ganga and merges into the eastern Kali river. The river is approximately 15-20 metres wide and 20 feet deep.

"With its comeback, villages and areas falling along the river will be benefitted. Besides, there will be restoration of natural habitat for plants and animals," said Raman Kant Tyagi, founder of Indian River Council based in Meerut.

Tyagi said, "The origin of the river was traced in Datiyana village of Hapur district in 2021 through satellite mapping and British gazetteer. But, for many decades, farmers had been diverting the water and changing its course. With the help of the district administration, the farmers were sensitised about the significance of the river, which was once considered a lifeline for the region, comprising nearly 200 villages that were affected in one way or the other."

He added, "The farmers agreed to vacate the land. A proposal was then sent to the state government by the minor irrigation department. After getting approval, a river rejuvenation project was started which has now concluded." The Neem river emanating from Hapur district, meanders through Bulandshahr and Aligarh districts, covering a distance of about 188 kilometres near Shyam Baba's temple in Kasganj, the main tributary of the Ganges which merges into the eastern Kali river. The seasonal river is approximately 15-20 metres wide and 20 feet deep.

NEEM RIVER

INDIAN RIVER COUNCIL
भारतीय नदी परिषद

दैनिक जागरण

दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

पाकिस्तान के पूर्व पीएम इमरान खान के घर से 'आतंकियों' की गिरफ्तारी को पुलिस तैयार 14

पिकनिक स्पाट के रूप में विकसित होगा नीम नदी का उद्गम स्थल : स्वतंत्र देव

नीम नदी उद्गम पुनर्जीवन उत्सव

यूं अपने मुकाम पर पहुंचा जागरण का अभियान

जमीन देने वालों को युगों तक करेंगे याद : स्वतंत्र देव

गांव दातियाना में नीम नदी उद्गम पुनर्जीवन उत्सव में प्रदेश के जल शक्ति मंत्री और राज्य मंत्री हुए शामिल

नीम नदी से मिलेगा लाभ

मैं नीम नदी, मुझे मिली जीवन की मिठास

मेरा पानी औषधीय गुणों वाला था...

नदी कार्य में सहयोग करने वालों को किया सम्मानित

'देशवासियों ने किया तय, अबकी बार भी मोदी सरकार'

Ukhe unh mn~xe iqutZhou ds ckn vc
mn~xe LFky dks gjk&Hkjk o LFkkbZ ikuhnkj
cukus rFkk unh dh lEiw.kZ /kkjk dks
iqutZhfor djus dk dk;Z tkjh gSA blesa
tgka lekt lg;ksx dj jgk gS ogha LFkkuh;
iz'kklu o th0vkbZ0tsM0 Hkh viuh
egRoiw.kZ Hkwfedk blesa fuHkk jgk gSA

Natural Environmental Education & Research Foundation

1st Floor, Samrat Shopping Mall, Garh Road,
Meerut (UP) - 250004

Contact: +91 94116 76951
email. raman4neer@gmail.com
web. www.theneerfoundation.org
web. eastkaliriverwaterkeeper.org
web. hindonriverwaterkeeper.in

email. theneerfoundation@gmail.com
raman.tyagi.378
theneerfoundation
Youtube. NEERFoundation

RAMAN KANT TYAGI (NADIPUTRA) @NGO_NEER

नीम नदी